राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 4 तेरहवीं विधान सभा के चतुर्थ सत्र का पहला दिवस संख्या 1

सोमवार,
22 फरवरी, 2010

राजस्थान विधान सभा की बैठक 12.51 बजे
राजस्थान विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): अध्यक्ष महोदय, आज चेहरे पर मुस्कान नहीं है।

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनी।
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ।

श्री अध्यक्ष: क्या कह रहे थे?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): आज चेहरे पर मुस्कान नहीं है, सीरियस कैसे हैं हुकुम आप?

श्री अध्यक्ष: आज सुबह पहले सबसे पहले यहां पर आप ही के दर्शन पहले हुए हैं।

सचिव।

श्री शांती कुमार धारीवाल (गृह मंत्री): अध्यक्ष महोदय, आज एक चर्चा सुनने को मिली कि प्रतिपक्ष के नेता ने आपको इस्तीफा दे दिया है तो सदन जानना चाहता है कि वस्तुस्थिति क्या है?

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति

श्री अध्यक्ष: कृपया विराजें। सचिव। प्लीज। प्लीज।

सचिव: अध्यक्ष महोदय, मैं, आपकी अनुमति से राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति सदन की मेज पर रखता हूँ ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से एक मिनट एक बात कहनी है। एक सेकंड। अध्यक्ष महोदय, यह सदन..। ...(व्यवधान)... अभिभाषण की प्रति सदन की मेज पर रखी उस पर आपत्ति है, मुझे कहना है, निवेदन करना है अनुमति दें।

श्री अध्यक्ष: एक मिनट।

सचिव: अध्यक्ष महोदय, मैं, आपकी अनुमति से गत सत्र में पारित उन विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूँ, जिन पर राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है :-

राज्यपाल महोदय द्वारा अनुमति प्राप्त विधेयक

1- राजस्थान विनियोग (संख्या-1) विधेयक, 2009

2- राजस्थान विवाहों का अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण विधेयक, 2009

3- राजस्थान न्यायालय फीस तथा वाद मूल्यांकन (संशोधन) विधेयक, 2009

4- राजस्थान नगरपालिका विधेयक, 2009

5- राजस्थान कृषि उपज मण्डी (संशोधन) विधेयक, 20096- राजस्थान पंचायती राज (संशोधन) विधेयक, 2009

श्री अध्यक्ष: सिर्फ एक मिनट में समाप्त करें।

व्यवस्था का प्रश्न

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की गोपनीयता

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान राजस्थान विधान सभा के बुलेटिन नं. 2 की ओर आकर्षित करना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल का अभिभाषण और एक गरिमापूर्ण समय और उस समय अगर हमारी परम्पराओं का हनन हो और नियमों का हनन हो तो अध्यक्ष महोदय, चिन्ता की बात है। महामहिम अपना भाषण पढ़ रहे थे उन्होंने अपना भाषण पूरा पढ़ा नहीं, हस्ताक्षर किये नहीं, टेबल किया नहीं उससे पहले ही उनके प्रमुख शासन सचिव श्रीमती मीनाक्षी जी हूजा उसी भाषण की प्रति को वहां बैठे-बैठे पढ़ रहे थे। ये गोपनीय दस्तावेज है जब तक सदन की मेज़ पर नहीं रखा जाता और अध्यक्ष महोदय, उसको उनका पढ़ना ये हमारा परम्पराओं के प्रतिकूल है इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि आसन प्रताड़ित करे और सरकार को सचेत भी करे कि कम से कम विधान सभा की प्रक्रिया एवं नियमों के बारे में जानकारी लेकर तो आये इस तरह की बात दुबारा नहीं हो।

श्री अध्यक्ष: समाप्त करें। आपकी बात नोटिस में आ गयी।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): अध्यक्ष महोदय, यह सामान्य प्रकरण नहीं है एक असामान्य प्रक्ररण है। मैं आपको निवेदन करना चाहूंगा कि हमारी परम्परा है कि कैबिनेट अभिभाषण को तैयार करती है, राज्यपाल महोदय के पास जाता है फिर राज्यपाल महोदय के आने के बाद यहां पर अभिभाषण पढ़ कर उस पर हस्ताक्षर करके रखते हैं वो सदन के पटल पर रखने के बाद माननीय सदस्य भी पढ़ सकते हैं और कोई भी पढ़ सकते हैं। आज इसके विपरीत हुआ है। आज वहां पर सचिव महोदय के पास बैठे हुए राज्यपाल महोदय के सचिव जी वो भाषण जिस प्रकार से अध्यक्ष महोदय पढ़ रहे थे उसी प्रकार से एक-एक लाइन के हिसाब से वो भाषण पढ़ रहे थे। हमने उस समय ही आपत्ति की थी आपकी तरफ इशारा भी किया लेकिन उस समय मैं नहीं चाहता था कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में किसी प्रकार से कोई बीच में बाधा उपस्थित हो इसलिए हम नहीं चाहते थे। इसलिए ये सदन की जो परम्पराएं हैं और जो गोपनीयता जो इस डाक्युमेंट की है वो किसी प्रकार से भंग न हो यह सरकार की भी जिम्मेदारी है और ये हमारी भी जिम्मेदारी है और जो अधिकारी आते हैं उनकी भी जानकारी में रहना चाहिए कि ये सदन है और सदन अपने नियम-परम्पराओं से चलता है उसमें इस प्रकार की बातचीत नहीं करनी चाहिए और ये बात कोई हम किसी बात को विशेष महत्व करने के लिए नहीं कह रहे हैं यह बात इसलिए कर रहे हैं कि अभिभाषण की गोपनीयता भंग होना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है और इसको आप नियमों के अन्तर्गत देखें और इस पर निश्चित रूप से व्यवस्था करें आप।

श्री अध्यक्ष: अध्यादेश। डॉ. जितेन्द्र सिंह। प्लीज। प्लीज, विराजें। कृपया आप विराजें।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): अध्यक्ष महोदय, आपने अधिकारियों को ट्रेनिंग दी। आपने एक दिन का समय लगाया उसका क्या फायदा अधिकारी तो कुछ उस पढ़ाई को पढ़ ही नहीं पाये। जो आपने भाषण दिया उसको सीख ही नहीं पाये और वो गोपनीयता भंग हो गयी तो आपकी उस क्लास का क्या हुआ अध्यक्ष महोदय?

अध्यादेश

डा. जितेन्द्र सिंह (ऊर्जा मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, आपकी अनुमति से निम्नांकित तीन अध्यादेश सदन की मेज पर रखता हूँ :-

1- श्रीधर विश्वविद्यालय, बिगोदना (झुन्झुनूं) अध्यादेश, 2009 (2009 का अध्यादेश संख्या -3)

2- एन.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय, नीमराना (अलवर) अध्यादेश, 2009 (2009 का अध्यादेश संख्या-4)

3- होम्योपैथी विश्वविद्यालय, जयपुर अध्यादेश, 2009 (2009 का अध्यादेश संख्या-5)

श्री अध्यक्ष: श्री भरत सिंह।

श्री भरत सिंह कुन्दनपुर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं, आपकी अनुमति से राजस्थान पंचायती राज (संशोधन) अध्यादेश, 2009 (2009 का अध्यादेश संख्या-6) सदन की मेज पर रखता हूँ ।

श्री अध्यक्ष: श्री परसादी लाल मीणा।

श्री परसादीलाल (सहकारिता मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं, आपकी अनुमति से राजस्थान सहकारी सोसाइटी (संशोधन) अध्यादेश, 2009 (2009 का अध्यादेश संख्या-7) सदन की मेज पर रखता हूँ ।

कैलाश/चौहान 22.02.2010 13.00 (1) 1n

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर मैं गत दिनों दिवंगत हुए राजस्थान के राज्यपाल श्री शीलेन्द्र कुमार सिंह, इस विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री रामनिवास मिर्धा, हरियाणा एवं उडीसा के पूर्व राज्यपाल तथा पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरचरण सिंह बरार, आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री डा. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी, पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु, हरियाणा के पूर्व मुख्य मंत्री राव श्री बीरेन्द्र सिंह, पूर्व विधायक एवं सांसद श्री वृद्धिचन्द जैन, पूर्व सांसद श्री दिनेश चन्द्र स्वामी, इस विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री चन्दनमल बैद, डा. उजला अरोडा, श्री श्रवणलाल, श्री मुंशीलाल महावर और श्री हरिप्रसाद शर्मा तथा इण्डियन ऑयल कारपोरेशन के सीतापुरा (जयपुर) स्थित डिपो एवं चम्बल नदी, कोटा के बाई पास पर निर्माणाधीन पुल के गिर जाने से हुए हादसों में मारे गये लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए यह शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

शीलेन्द्र कुमार सिंह, श्री के निधन पर

राजस्थान के राज्यपाल श्री शीलेन्द्र कुमार सिंह का जन्म 24 जनवरी, 1932 को हुआ। आपने एम.ए. तथा एलएल.बी की उपाधियां प्राप्त कीं। आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज से फारसी भाषा तथा अंतरराष्ट्रीय विधि का अध्ययन भी किया।

श्री शीलेन्द्र कुमार सिंह 6 सितम्बर, 2007 को राजस्थान के राज्यपाल पद पर आसीन हुए। आपने इस गरिमामय पद की संवैधानिक मर्यादाओं का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए राजस्थान की जनता की सेवा की तथा प्रदेश के विकास में सहयोग प्रदान किया। श्री सिंह सभी सामयिक विषयों पर अपनी बेबाक राय व्यक्त करने के लिए जाने जाते थे। श्री शीलेन्द्र कुमार सिंह 16 दिसम्बर, 2004 से 4 सितम्बर, 2007 तक अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल भी रहे।

कुशल प्रशासक रहे श्री सिंह वर्ष 1954 में भारतीय राजनयिक सेवा में आये तथा वर्ष 1956 से 1959 तक तेहरान में तृतीय सचिव नियुक्त किये गये। विदेश मामलों के विशेषज्ञ

रहे श्री सिंह वर्ष 1974 से 1977 तक जोर्डन, लेबनान एवं साइप्रस में, वर्ष 1977 से 1979 तक अफगानिस्तान में, वर्ष 1982 से 1985 तक ऑस्ट्रिया तथा वर्ष 1958 से 1989 तक पाकिस्तान में भारत के राजदूत रहे। विदेश मंत्रालय में विभिन्न पदों के उत्तरदायित्वों का कुशलतापूर्वकिनर्वहन करने वाले श्री सिंह वर्ष 1979 से 1982 तक अतिरिक्त विदेश सचिव रहे। आपको वर्ष 1989 में विदेश सचिव बनाया गया। आप भारत सरकार के प्रवक्ता तथा वाणिज्य मंत्रालय में विदेश व्यापार के निदेशक भी रहे।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री सिंह विज्ञान एवं तकनीकी की राष्ट्रीय समिति, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की प्रबन्ध परिषद के सदस्य रहे। आप योजना आयोग तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से भी सम्बद्ध रहे। शैक्षणिक क्षेत्र में नवाचार के प्रणेता श्री सिंह नई शिक्षा नीति पर गठित समिति तथा केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य भी रहे। अध्ययन में रुचि रखने वाले श्री सिंह ने आगरा विश्वविद्यालय में इतिहास का अध्यापन किया तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली की शैक्षिक परिषद के सदस्य भी रहे। विदेश मामलों पर आपके आलेख राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

श्री सिंह अनेक सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा सामाजिक संगठनों से जुडे रहे। श्री सिंह के निधन से देश ने एक कुशल प्रशासक, दूरदर्शी राजनयिक तथा सच्चा जनसेवक खो दिया है।

श्री शीलेन्द्र कुमार सिंह का दिनांक 1 दिसम्बर, 2009 को निधन हो गया।

रामनिवास मिर्धा, श्री के निधन पर

पूर्व विधान सभा अध्यक्ष तथा केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा का जन्म 24 अगस्त, 1924 को नागौर जिले के कुचेरा ग्राम में हुआ। आपने एम.ए. तथा एलएल.बी की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री रामनिवास मिर्धा पहली, दूसरी तथा तीसरी राजस्थान विधान सभा में कांग्रेस के विधायक रहे। आप पहली विधान सभा के लिए अक्टूबर, 1953 में हुए उप चुनाव में नागौर (पूर्व), दूसरी विधान सभा में लाडनूं तथा तीसरी विधान सभा में नागौर निर्वाचन क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। श्री मिर्धा राजस्थान सरकार में नवम्बर, 1954 से अप्रैल, 1957 तक कृषि, सिंचाई तथा यातायात विभाग के मंत्री रहे। आप 25 अप्रैल, 1957 से 3 मई, 1967 तक लगातार दो बार राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। श्री मिर्धा ने अपने सौम्य और शिष्ट व्यवहार से संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में विशिष्ट स्थान बनाया। दूसरी विधान सभा में अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने अपनी सामंजस्यता की नीति से पक्ष और प्रतिपक्ष को कभी शिकायत का मौका नहीं दिया। अध्यक्ष पद के दायित्वों के निष्पक्ष और दक्षतापूर्वक निर्वहन के फलस्वरूप आपको तीसरी विधान सभा के लिए अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया गया। दूसरी पारी में आपने सभी दलों के सहयोग से स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का निर्माण करने के साथ ही पूर्व स्थापित परिपाटियों को सुदृढ बनाया।

सरल और सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री रामनिवास मिर्धा चिन्तक, विचारक और सच्चे जनसेवक थे। आप वर्ष 1967 से 1984 तक चार बार राज्य सभा तथा आठवीं एवं दसवीं लोक सभा के सदस्य रहे। अनुभवी संसदविद् श्री मिर्धा मार्च, 1977 से अप्रैल, 1980 तक राज्यसभा के उप सभापति पद पर आसीन रहे। केन्द्रीय राज्य मंत्री के रूप में आपने कृषि, सिंचाई, परिवहन, गृह, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार और संचार सहित अनेक मंत्रालयों के दायित्वों का निर्वहन किया। श्री मिर्धा वर्ष 1987 से 1989 तक केन्द्रीय मंत्री रहे। आप प्रतिभूति एवं बैंकिंग लेनदेन में अनियमितताओं की जांच हेतु गठित संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष भी रहे।

कला एवं संस्कृति के पोषक श्री मिर्धा ललित कला अकादमी, इंडियन हैरीटेज सोसायटी, दिल्ली अर्बन आर्ट्स कमीशन तथा राजस्थान संस्थान संघ के अध्यक्ष रहे। आप अनेक युवा एवं खेल संगठनों से भी सम्बद्ध रहे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री मिर्धा ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमण्डल संसदीय संघ, इन्टर पार्लियामेन्ट्री यूनियन द्वारा आयोजित अनेक सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। अध्ययन में रुचि रखने वाले श्री मिर्धा के आलेख अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। श्री रामनिवास मिर्धा के निधन से देश ने एक विद्वान संसदविद् तथा लोकप्रिय जन नेता खो दिया है।

श्री रामनिवास मिर्धा का निधन दिनांक 29 जनवरी, 2010 को हो गया।

हरचरण सिंह बरार, श्री के निधन पर

हरियाणा एवं उडीसा के पूर्व राज्यपाल तथा पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरचरण सिंह बरार का जन्म 21 जनवरी, 1922 को पंजाब के सराय ननगा ग्राम में हुआ। आपने लाहौर के राजकीय महाविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

श्री हरचरण सिंह बरार फरवरी, 1977 से सितम्बर, 1977 तक उडीसा के तथा सितम्बर, 1977 से दिसम्बर, 1979 तक हरियाणा के राज्यपाल पद पर आसीन रहे। इससे पूर्व श्री बरार वर्ष 1960 एवं 1962 में संयुक्त पंजाब विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। आप तीन बार पंजाब विधान सभा के विधायक रहे। श्री बरार 31 अगस्त, 1995 से 21 नवम्बर, 1966 तक पंजाब के मुख्य मंत्री रहे। आप पंजाब सरकार में सिंचाई, ऊर्जा, खेल तथा नागरिक उड्डयन विभागों के राज्य मंत्री भी रहे।

कृषि एवं बागवानी के क्षेत्र में कार्यशील रहे श्री बरार अखिल भारतीय बागवानी विकास परिषद के सभापति तथा 15 वर्षों तक अखिल भारतीय कपास विकास परिषद एवं अखिल भारतीय कपास सलाहकार बोर्ड के सदस्य रहे। आप भारतीय कपास निगम के निदेशक तथा अखिल भारतीय कृषकफोरम की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। श्री बरार के निधन से देश में एक कुशल प्रशासक और अनुभवी राजनेता की कमी हो गई है।

श्री हरचरण सिंह बरार का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक 6 सितम्बर, 2009 को निधन हो गया।

वाई.एस. राजशेखर रेड्डी, डॉ. के निधन पर

आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी का जन्म 8 जुलाई, 1949 को आंध्र प्रदेश के कुडप्पा जिले के जम्मल मदगु में हुआ। आपने एम.बी.बी.एस की उपाधि प्राप्त की तथा तिरुपति के एस.वी. कालेज में हाउस सर्जन रहे।

डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी आंध्र प्रदेश विधान सभा के 6 बार विधायक निर्वाचित हुए। श्री रेड्डी 14 मई, 2004 को आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री पद पर आसीन हुए तथा वर्ष 2009 के आम चुनावों के बाद पुनः मुख्य मंत्री बने। मुख्य मंत्री के रूप में आपने आंध्र प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया तथा समाज के दलित एवं उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए समर्पित रहे। प्रगतिशील नेता डाद्व रेड्डी ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश को आगे बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डा. रेड्डी वर्ष 1981 से 1983 तक आंध्र प्रदेश सरकार में ग्रामीण विकास, उत्पाद शुल्क तथा शिक्षा विभाग के मंत्री रहे। आप 1999 से 2004 तक आंध्र प्रदेश विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता भी रहे। डा. राजशेखर रेड्डी नौंवी से बारहवीं लोकसभा तक चार बार कुडप्पा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद रहे।

चौदह हजार किलोमीटर की पद यात्रा करने वाले ऊर्जावान राजनेता डा. रेड्डी वर्ष 1975 से 1978 तक जिला युवा कांग्रेस कुडप्पा के सचिव रहे। आप दो बार आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी का हवाई दुर्घटना में दिनांक 2 सितम्बर, 2009 को निधन हो गया।

ज्योति बसु, श्री के निधन पर

पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु का जन्म 8 जुलाई, 1941 को कलकत्ता में हुआ। आपने प्रेसीडेन्सी कालेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात आप विधि के उच्च अध्ययन के लिए लंदन चले गये।

ans/ usc 13.10 1o 22022010

श्री ज्योति बसु स्वतंत्रता से पूर्व वर्ष 1946 में पहली बार बंगाल विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। स्वतंत्रता के पश्चात आप वर्ष 1952 से 1996 तक 11 बार पश्चिम बंगाल विधान सभा के विधायक निर्वाचित हुए। अपने दीर्घ राजनीतिक जीवन में आप वर्ष 1957 से 1967 तक प्रतिपक्ष के नेता तथा वर्ष 1967 तथा 1969 में संयुक्त मोर्चा सरकार में उप मुख्यमंत्री रहे। आप 21 जून,1977 से 6 नवम्बर,2000 तक लगातार 23 वर्षों तक पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद पर आसीन रहे। श्री बसु ने भूमि सुधारों की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करते हुए 10 लाख भूमिहीन किसानों को जमीदारों और सरकारी कब्जे वा ली जमीनों

का मालिकाना हक दिलवाकर दूसरे राज्यों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया आपने वर्ष 2000 में स्वास्थ्य कारणों से सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया। श्री बसु भारतीय राजनीतिक इतिहास में सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री के रूप में दी गई सेवाओं के लिए जाने जाएंगे।

श्री ज्योति बसु का दिनांक 17 जनवरी,2010 को निधन हो गया।

निधन के बाद भी मानवसेवा में योगदान करने की दृष्टि से श्री बसु ने वर्ष 2003 में ही अपनी देहदान की घोषणा कर दी थी । उन्होंने एक कार्यक्रम में बोलते हुए कहा था कि ' मैं नहीं जानता कि मेरे इस बूढे शरीर के अंग प्रत्यारोपण के योग्य रहेंगे भी या नहीं लेकिन मेरा विश्वास है कि यह शरीर चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थियों तथा शोधकर्ताओं के जरूर काम आएगा।' श्री बसु के निधन के बाद उनकी इच्छानुसार उनका शरीर राज्य के एस.एस.के.एम. अस्पताल के अनाटोमी विभाग को सौंप दिया गया।

राव श्री बीरेन्द्र सिंह,श्री के निधन पर

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री राव श्री बीरेन्द्र सिंह का जन्म 20 फरवरी,1921 को महेन्द्रगढ़ जिले के गांव नंगल पठानी में हुआ। आपने दिल्ली के सैन्ट स्टीफन्स कालेज से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।

राव श्री बीरेन्द्र सिंह वर्ष 1954 से 1966 तक संयुक्त पंजाब विधान परिषद तथा वर्ष 1967 से 1971 तक हरियाणा विधान सभा के सदस्य रहे। आप 23 मार्च,1967 से 21 नवम्बर,1967 तक हरियाणा के मुख्यमंत्री पद पर आसीन रहे। श्री सिंह 1956 में पंजाब सरकार में उप मंत्री तथा वर्ष 1957 से 1961 तक राजस्व,सिंचाई, विद्युत और परिवहन विभाग के मंत्री रहे। आप वर्ष 1967 में हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष तथा वर्ष 1968 से 1971 तक हरियाणा विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता रहे। श्री सिंह पांचवी, सातवीं, आठवीं और नौंवी लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। लोकसभा के कार्यकाल के दौरान आप वर्ष 1980 से 1984 तक केन्द्र सरकार में कृषि,सिंचाई,ग्रामीण पुनर्निर्माण एवं सहकारिता मंत्री रहे। आठवीं लोक सभा के कार्यकाल के दौरान आपको दिसम्बर,1984 में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री बनाया गया।

भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त अधिकारी रहे श्री सिंह वर्ष 1967 में विशाल हरियाणा पार्टी के संस्थपक रहे। आप राव तुलसी राम कालेज,नई दिल्ली, महिला डिग्री कालेज, रेवाड़ी और राव बीरेन्द्र सिंह शिक्षक प्रशिक्षण कालेज, रेवाड़ी के संस्थापक भी रहे। अनेक धर्मार्थ एवं शिक्षा ट्रस्टों के अध्यक्ष और ट्रस्टी रहे श्री सिंह अनेक खेल संगठनों से भी सम्बद्ध रहे।

राव श्री बीरेन्द्र सिंह का दिनांक 30 सितम्बर,2009 को निधन हो गया।

वृद्धिचन्द जैन,श्री के निधन पर

पूर्व विधायक एवं सांसद श्री वृद्धिचन्द जैन का जन्म 4 जुलाई,1920 को बाड़मेर में हुआ। आपने बी.कॉम. तथा एलएलबी की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री वृद्धिचन्द जैन चौथी, पांचवीं, छठी तथा ग्यारहवीं विधान सभा में बाड़मेर निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक रहे। विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप जन लेखा समिति, राजकीय उपक्रम समिति तथा नियम समिति के सदस्य रहे। श्री जैन सातवीं तथा आठवीं लोक सभा में बाड़मेर निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के सांसद रहे। लोक सभा के कार्यकाल के दौरान आप रेलवे सलाहकार समिति तथा योजना सलाहकार समिति सहित अनेक समितियों के सदस्य रहे।

अपने सार्वजनिक जीवन में आप वर्ष 1959 में बाड़मेर नगरपालिका के सदस्य तथा वर्ष 1959 से 1964 तक जिला परिषद, बाड़मेर के जिला प्रमुख रहे। आप जिला विकास समिति, जिला अकाल सलाहकार समिति के सदस्य तथा बाड़मेर जिला नशाबंदी समिति के अध्यक्ष भी रहे। प्रारम्भ से ही कांग्रेस से सम्बद्ध रहे श्री जैन जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे।

पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय रहे श्री जैन ने वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। आप प्रदेश के विकास से जुड़ें विभिन्न कार्यक्रमों से सम्बद्ध रहे। श्री जैन ने सीमावर्ती क्षेत्र में सड़कों के निर्माण तथा उच्च शक्ति के दूरदर्शन एवं रेडियों स्टेशनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाज सेवा में रूचि रखने वाले श्री जैन 15 वर्षों तक बाड़मेर जिला भारत सेवक के समाज तथा बाड़मेर नगर होम्योपैथिक अस्पताल के 20 वर्षों तक अध्यक्ष रहे।

श्री वृद्धिचन्द जैन का दिनांक 13 जनवरी,2010 को निधन हो गया।

दिनेश चन्द्र स्वामी, श्री के निधन पर

पूर्व सांसद श्री दिनेश चन्द्र स्वामी का जन्म 14 जनवरी,1936 को जयपुर में हुआ। आपने अंग्रेजी साहित्य,अर्थशास्त्र तथा लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर तथा एलएलबी की उपाधियां प्राप्त की।

श्री दिनेश चन्द्र स्वामी वर्ष 1976 में राज्य सभा के लिए राजस्थान से सांसद निर्वाचित हुए। श्री स्वामी अपने सार्वजनिक जीवन में राज्य के महाधिवक्ता तथा वर्ष 1970 से 1973 तक जयपुर नगर परिषद के सदस्य रहे। अध्ययन में रूचि रखने वाले श्री स्वामी राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट तथा सिंडीकेट के सदस्य भी रहे। अनेक खेल संगठनों से सम्बद्ध रहे श्री स्वामी वर्ष 1963 से 1966 तक राजस्थान विश्वविद्यालय खेल बोर्ड,वर्ष 1969 से 1972 तक राजस्थान राज्य खेल परिषद तथा अखिल भारतीय खेल परिषद के सदस्य रहे। आपने

राजस्थान विश्वविद्यालय खेल परिषद के सभापति रहते हुए कई सेमीनारों का आयोजन किया। श्री स्वामी वर्ष 1973 से 1977 तक जयपुर बार एसोसियेशन के प्रेसीडेन्ट भी रहे। मुसलिम हाई स्कूल, जयपुर की संचालन समिति के सदस्य रहे श्री स्वामी छात्रों,कामगारों,अल्पसंख्यकों तथा पिछड़े वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे।

श्री स्वामी ' कांग्रेस विचारधारा' से जुड़े विषय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित हुए। आपने ' द ईस्टर्न पीपल' राजनीतिक साप्ताहिक का प्रकाशन तथा बार एसोसियेशन द्वारा प्रकाशित दो स्मारिकाओं का सम्पादन भी किया।

श्री दिनेश चन्द्र स्वामी का दिनांक 9 सितम्बर,2009 को निधन हो गया।

चन्दनमल बैद,श्री के निधन पर

पूर्व मंत्री श्री चन्दनमल बैद का जन्म 27 अक्टूबर,1922 को चूरू के सरदारशहर में हुआ। आपने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से एम.ए., एलएलबी की उपधियां प्राप्त की।

श्री बैद वर्ष 1952 में पहली राजस्थान विधान सभा के लिए हुए आम चुनावों में सरदारशहर निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक निर्वाचित हुए। इसके बाद आप दूसरी,तीसरी और पांचवी विधान सभा में भी इसी निर्वाचन क्षेत्र से तथा सातवीं, नौवीं, दसवीं और ग्यारहवीं विधान सभा में तारानगर निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक निर्वाचित हुए।

श्री बैद की वित्त संबंधी मामलों में गहरी पकड़ होने के कारण आपको वर्ष 1953 में उप मंत्री के रूप में विधि,न्याय एवं निर्वाचन विभाग के साथ ही वित्त विभाग का दायित्व भी सौंप गया। वर्ष 1972 में आपको मंत्री के रूप में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी,राजकीय उपक्रम,चिकित्सा एवं स्वास्थ्य,शिक्षा तथा आबकारी विभाग के साथ साथ वित्त, आयोजना और करारोपण विभाग का दायित्व भी सौंपा गया। इसके बाद भी आपने वर्ष 1973-77,1981-82 तथा 1998-2000 में वित्त मंत्री के दायित्वों का निर्वहन किया। वित्त मंत्री के रूप में आपने विधान सभा में सर्वाधिक 9बार राज्य का बजट प्रस्तुत किया। आपने मंत्री के रूप में इंदिरा गांधी नहर परियोजना, सिंचित क्षेत्र विकास, उपनिवेशन आदि विभागों का दायित्व भी बखूबी निभाया।

प्रारम्भ से ही कांग्रेस से सम्बद्ध रहे श्री बैद वर्ष 1978 में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे। आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लम्बे समय से सदस्य रहे। आप बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के मंत्री तथा कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे।

शैक्षणिक प्रवृतियों में विशेष रूचि रखने वाले श्री बैद विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़ें रहे। आपने सिंगापुर,मलेशिया,फ्रांस, सोवियत रूस, इंग्लैण्ड स्विट्जरलैण्ड सहित अनेक देशों की यात्रा की। श्री बैद के निधन से राज्य में आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ तथा पुरानी पीढ़ी के कद्दावर नेता की कमी हो गई है।

श्री चन्दनमल बैद का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक 20 फरवरी,2010 को निधन हो गया।

उजला अरोड़ा, डॉ. के निधन पर

पूर्व राज्य मंत्री एवं विधायक डॉ. उजला अरोड़ा का जन्म 2 दिसम्बर,1933 को उत्तर प्रदेश के मेरठ मेंहुआ। अध्ययन में रूचि रखने वाली डॉ .अरोड़ा ने अनेक विषयों में एम.ए. तथा एलएलबी, डिप्लोमा इन लेबर लॉ , साहित्यरत्न एवं आयुर्वेदरत्न की उपाधियां प्राप्त की।

डॉ .उजला अरोड़ा छठी से दसवीं राजस्थान विधान सभा तक लगातार 5 बार जयपुर ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रही। आप छठी विधान सभा में जनता पार्टी तथा सातवीं से दसवीं विधान सभा तक भारतीय जनता पार्टी की विधायक निर्वाचित हुई। दसवीं विधान सभा के कार्यकाल में आप जुलाई,1998 से नवम्बर,1998 तक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,भाषा तथा भाषाई अल्पसंख्यक विभाग की राज्य मंत्री रही। आपके पास संस्कृत शिक्षा विभाग का स्वतंत्र प्रभार भी रहा। विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप पुस्तकालय समिति तथा प्राक्कलन समिति 'ख' की सभापति तथा याचिका समिति एवं सरकारी आश्वासनों सम्बन्धी समिति की सदस्य रही।

डॉ. उजला अरोड़ा कन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड,जयपुर टेलीफोन सलाहकार समिति, राजस्थान राज्य अल्प बचत परामर्शदात्री समिति,आयुर्वेद प्रदेश सलाहकार समिति,राजस्थान शासन हिन्दी विधायी समिति तथा उपभोक्ता संरक्षण मंच की राजस्थान इकाई की सदस्य रही। आप वर्ष 1978 से 1982 तक नशाबंदी मण्डल,जयपुर की अध्यक्ष तथा भारती मंदिर की कुलपति रही। कमजोर तथा मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रही डॉ, उजला अरोड़ा मजदूर संघ की प्रादेशिक सदस्य रही। आपने विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई तथा जेल यात्राएं भी की। आप वर्ष 1980 से 1983 तक भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की अध्यक्ष तथा केन्द्रीय महिला मोर्चा की सदस्य रही।

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु प्रयासरत रही डॉ. उजला अरोड़ा अस्पृश्यता निवारण समिति की संयोजक रही। आप गुलाबी नगर विचार मंच, जयपुर की संस्थापक भी रही। काव्य में रूचि रखने वाली डॉ. उजला अरोड़ा ने अनेक मुशायरों तथा काव्य गोष्ठियों का आयोजन किया। ' मेरी धरती के गीत ' आपका प्रकाशित काव्य संग्रह है।

डॉ. उजला अरोड़ा का दिनांक 5 अक्टूबर,2009 को निधन हो गया।

दुर्गा/चौहान 22022010 1320 1p

श्रवणलाल, श्री के निधन पर

पूर्व विधायक श्री श्रवणलाल का जन्म 8 अगस्त, 1935 को हिण्डौन तहसील के महु

इब्राहिमपुर में हुआ। आपने उच्च प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की।

श्री श्रवणलाल तीसरी, चौथी तथा छठी राजस्थान विधान सभा के हिण्डौन निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहे। आप तीसरी एवं चौथी विधान सभा में जनसंघ से तथा छठी विधान सभा में जनता पार्टी से सम्बद्ध रहे। विधान सभा में आप अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे।

श्री श्रवणलाल का दिनांक 5 नवम्बर, 2009 को निधन हो गया।

मुंशीलाल महावर, श्री के निधन पर

पूर्व राज्य मंत्री तथा विधायक श्री मुंशीलाल महावर का जन्म 7 जून, 1939 को दौसा में हुआ। आपने अर्थ शास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

श्री मुंशीलाल महावर पाँचवी राजस्थान विधान सभा में बस्सी सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक रहे। श्री महावर अक्टूबर, 1973 से अप्रैल, 1977 तक राजस्थान सरकार के कृषि एवं पशुपालन सहित अनेक विभागों के राज्य मंत्री रहे। आपके पास सितम्बर, 1974 से अप्रैल, 1977 तक भेड़ एवं ऊन तथा स्टेट मोटर गैराज विभागों का स्वतंत्र प्रभार भी रहा।

अपने सार्वजनिक जीवन में आप वर्ष 1960 से 1961 तक राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ लिमिटेड के मंत्री, वर्ष 1968 से 1969 तक भूमि विकास बैंक लिमिटेड के शाखा सचिव तथा वर्ष 1965 में प्लानिंग फोरम, राजकीय कॉलेज, दौसा के सचिव रहे। श्री महावर कांग्रेस सेवादल, दौसा जिला कांग्रेस समिति तथा प्रदेश कांग्रेस समिति के सदस्य रहे। आप राजस्थान दलित सेवा संघ के संगठन मंत्री भी रहे।

श्री मुंशीलाल महावर का दिनांक 3 जनवरी, 2010 को निधन हो गया।

हरिप्रसाद शर्मा, श्री के निधन पर

पूर्व विधायक श्री हरिप्रसाद शर्मा का जन्म दिनांक 8 सितम्बर, 1927 को हुआ। आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। श्री हरिप्रसाद शर्मा तीसरी राजस्थान विधानसभा में पाटन निर्वाचन क्षेत्र से जनसंघ के विधायक रहे। विधान सभा में आप अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण के लिये सदैव प्रयत्नशील रहे।

श्री शर्मा अपने सार्वजनिक जीवन में नगरपालिका, लाखेरी के 6 वर्ष तक अध्यक्ष, सीमेन्ट वर्क्स बहुधन्धी, लाखेरी के उप सभापति तथा कामगार संघ के 4 वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे। आप श्री गांधी विद्यामन्दिर के अध्यक्ष भी रहे। खेतिहर मजदूरों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे श्री शर्मा अनेक संगठनों से सम्बद्ध थे।

श्री हरिप्रसाद शर्मा का दिनांक 23 जनवरी, 2010 को निधन हो गया।

मैं अपनी ओर से तथा इस सदन के सभी माननीय सदस्यों की ओर से दिवंगतों के प्रति शोक प्रकट करते हुए उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं तथा दिवंगत महानुभावों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत व्यक्तियों की आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोकसंतप्त परिजनों को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति दे।

सीतापुरा (जयपुर) स्थित इंडियन ऑयल कारपोरेशन के तेल डिपो अग्निकाण्ड के मृतक

दिनांक 29 अक्टूबर, 2010 को सीतापुरा (जयपुर) स्थित इण्डियन ऑयल कारपोरेशन के तेल डिपों के 11 टैंकरों में लगी भीषण आग से 11 लोगों की मौत हो गई तथा 132 लोग घायल हो गये। लगभग 10 दिन तक धधकती रही इस आग से सम्पत्ति का भी भारी नुकसान हुआ।

चम्बल नदी, कोटा बाई पास निर्माणाधीन पुल हादसे के मृतक

दिनांक 24 दिसम्बर, 2009 को चम्बल नदी, कोटा के बाई पास पर निर्माणाधीन पुल के अचानक गिर जाने से हुए हादसे में पुल पर कार्य कर रहे लोग नीचे दब गये। इस हृदय विदारक दुर्घटना में 48 लोगों की मौत हो गई तथा 12 व्यक्ति घायल हो गये।

मैं, इन हादसों में मारे गये व्यक्तियों की मृत्यु पर भी शोक प्रकट करता हूं तथा पीड़ित परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

माननीय सदस्यगण कृपया दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगतों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें।

(तत्पश्चात् सदन द्वारा दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।)

सदन की बैठक मंगलवार, दिनांक 23.02.2010 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 13.25 बजे मंगलवार, दिनांक 23.02.2010 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई।)

....